आई सी ए आर - भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

प्रमुख सलाह (फरवरी 1-15, 2025)

भारत के सभी क्षेत्रों में गेहूं की बुआई और अन्य पद्धतियाँ

फसल मौसम 2024-25

सामान्य सुझाव

- फसल को पाले से बचाने के लिए यदि मिट्टी में पर्याप्त नमी न हो तो हल्की सिंचाई की जा सकती है
- पानी बचाने और लागत कम करने के लिए समय पर और विवेकपूर्ण तरीके से खेतों की सिंचाई करें। उचित खरपतवार प्रबंधन का पालन करें।
- सिंचाई से पहले मौसम पर नज़र रखें और यदि बारिश का पूर्वानुमान हो तो सिंचाई न करें ताकि अधिक पानी की स्थिति से बचा जा सके।
- यदि फसल में पीलापन हो तो अत्यधिक नाइट्रोजन (यूरिया) का उपयोग न करें। इसके अलावा, कोहरे या बादल वाली स्थिति में नाइट्रोजन के उपयोग से बचें।
- पीले रतुआ और भूरे रतुआ संक्रमण के लिए फसल की नियमित निगरानी करें और नजदीकी संस्थान, एसएयू या केवीके से परामर्श करें।
- संरक्षण कृषि में, सिंचाई से ठीक पहले यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करनी चाहिए।

उर्वरक की मात्रा:

देर से बुआई की स्थिति में नाइट्रोजन का प्रयोग बुआई के 40-45 दिन बाद पूरा कर लेना चाहिए। बेहतर परिणाम के लिए सिंचाई से ठीक पहले यूरिया का प्रयोग करें।

देर से बोई गई फसल के लिए खरपतवार प्रबंधन:

- गेहूं में संकरी पत्ती वाले खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए क्लोडिनाफॉप 15 डब्ल्यूपी @ 160 ग्राम प्रति एकड़ या पिनोक्साडेन 5 ईसी @ 400 मिली प्रति एकड़ का छिड़काव करें। चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए 2,4-डी 500 मिली/एकड़ या मेटसल्फ्यूरॉन 20 डब्ल्यूपी 8 ग्राम प्रति एकड़ या कार्फेंट्राजोन 40 डीएफ 20 ग्राम/एकड़ का छिड़काव करें।
- यदि गेहूं के खेत में संकरी और चौड़ी पत्ती वाले दोनों खरपतवार हैं तो सल्फोसल्फ्यूरॉन 75 डब्ल्यूजी @ 13.5 ग्राम/एकड़ या सल्फोसल्फ्यूरॉन+मेटसल्फ्यूरॉन 80 डब्ल्यूजी 16 ग्राम/एकड़ को 120-150 लीटर पानी में मिलाकर पहली सिंचाई से पहले या सिंचाई के 10-15 दिन बाद छिड़काव करें। वैकल्पिक रूप से, मेसोसल्फ्यूरॉन + आयोडोसल्फ्यूरॉन 3.6% डब्ल्यूडीजी @ 160 ग्राम/एकड़ का भी गेहूं में विविध खरपतवार नियंत्रण के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।
- बहु खरपतवारनाशी प्रतिरोधी फलारिस माइनर (कनकी/गुल्ली डंडा) के नियंत्रण के लिए क्लोडिनाफॉप + मेट्रिब्यूजिन 12+42% डब्ल्यूपी के तैयार मिश्रण को 200 ग्राम/एकड़ की दर से पहली सिंचाई के 10-15 दिन बाद 120-150 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। यदि बुवाई के समय पायरोक्सासल्फोन 85 डब्ल्यूजी का इस्तेमाल नहीं किया गया हो तो इसे 60 ग्राम/एकड़ की दर से बुवाई के 20 दिन बाद यानी पहली सिंचाई से 1-2 दिन पहले भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

सिंचाई प्रबंधन:

- किसानों को सलाह है कि गेहूं की फसल में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। तेज हवा वाले मौसम की स्थिति में, लोजिंग से बचने के लिए सिंचाई न करें, ताकि उपज के नुकसान से बचा जा सके। तापमान बढ़ने की स्थिति में, किसान फसल को सूखे से बचाने और तनाव को कम करने के लिए; i) 0.2% म्यूरेट ऑफ पोटाश (प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में 400 ग्राम एम ओ पी घोलें) या, ii) 2% KNO_3 (प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में 4.0 किलोग्राम) दो बार बूट लीफ पर और एंथेसिस चरण के बाद स्प्रे कर सकते हैं।

पीले और भूरे रतुआ के लिए सलाह:

- किसान भाइयों से अनुरोध है कि यदि धारीदार रतुआ (पीला रतुआ) या भूरा रतुआ की कोई घटना हो तो वे नियमित रूप से अपनी फसल का निरीक्षण करें। यदि किसान अपने गेहूं के खेतों में रतुआ का प्रकोप देखते हैं, और पुष्टि करते हैं, तो प्रोपीकोनाज़ोल 25ईसी के एक स्प्रे की सिफारिश की जाती है। एक लीटर पानी में एक मिलीलीटर रसायन मिलाना चाहिए। एक एकड़ गेहूं की फसल में 200 मिलीलीटर कवकनाशी को 200 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।

गुलाबी छेदक के लिए सलाह:

यह देखा गया है कि धान, मक्का, कपास, गन्ना उगाने वाले क्षेत्रों में गुलाबी छेदक का हमला होता है। प्रभावित पौधे पीले पड़ जाते हैं और उन्हें आसानी से उखाड़ा जा सकता है। जब पौधों को उखाड़ा जाता है, तो उनकी निचली नसों पर गुलाबी रंग के कैटरपिलर देखे जा सकते हैं।

प्रबंधन:

- संक्रमित टिलर को हाथ से उखाड़ने और उन्हें नष्ट करने से छेदक का हमला कम होता है।
- यदि संक्रमण अधिक है, तो 1000 मिली क्विनलफॉस 25%EC को 500 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

(रतन तिवारी)
निदेशक